

विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत      दिनांक 24-02-2021

वर्ग षष्ठ शिक्षक राजेश कुमार पाण्डेय

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित

कारक

कारक नाम - वाक्य के अन्दर उपस्थित पहचान-  
चिह्न

कर्ता - ने (रामः गच्छति।)

कर्म - को (to) (बालकः विद्यालयं गच्छति।)

करण - से (by), द्वारा (सः हस्तेन खादति।)

सम्प्रदान -को के लिये (for) (निर्धनाय धनं देयं।)

अपादान - से (from) अलगाव (वृक्षात् पत्राणि पतन्ति।)

सम्बन्ध - का, की, के (of), रा, री, रे, ना, नी, ने, ( रामः दशरथस्य पुत्रः आसीत्। )

अधिकरण - में, पे, पर (in/on) (यस्य गृहे माता नास्ति,)

सम्बोधन - हे,भो,अरे, (हे राजन् ! अहं निर्दोषः।)

वाच्य

संस्कृत में तीन वाच्य होते हैं- कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य।

कर्तृवाच्य में कर्तापद प्रथमा विभक्ति का होता है।  
छात्रः श्लोकं पठति- यहाँ छात्रः कर्ता है और प्रथमा विभक्ति में है।

कर्मवाच्य में कर्तापद तृतीया विभक्ति का होता है।  
जैसे, छात्रेण श्लोकः पठ्यते। यहाँ छात्रेण तृतीया विभक्ति में है।

अकर्मक धातु में कर्म नहीं होने के कारण क्रिया की प्रधानता होने से भाववाच्य के प्रयोग सिद्ध होते हैं।  
कर्ता की प्रधानता होने से कर्तृवाच्य प्रयोग सिद्ध होते हैं। भाववाच्य एवं कर्मवाच्य में क्रियारूप एक जैसे ही रहते हैं।

क्र कर्तृवाच्य भाववाच्य

1. भवान् तिष्ठतु भवता स्थीयताम्
2. भवती नृत्यतु भवत्या नृत्यताम्
3. त्वं वर्धस्व त्वया वर्धयताम्
4. भवन्तः न सिद्ध्यन्ताम् भवद्भिः न खिद्यताम्
5. भवत्यः उत्तिष्ठन्तु भवतीभिः उत्थीयताम्
6. यूयं संचरत युष्माभिः संचर्यताम्
7. भवन्तौ रुदिताम् भवद्भ्यां रुद्यताम्
8. भवत्यौ हसताम् भवतीभ्यां हस्यताम्
9. विमानम् उड्डीयताम् विमानेन उड्डीयताम्
- 10 सर्वे उपविशन्तु सर्वेः उपविश्यताम्

